mines. The workers will also face a lot of problems.

In view of this, I urge the Government of India to open the headquarters of the Gandhamardan bauxite project at Harishankar or Paikmal in Orissa.

(iii) NEED TO TAKE EFFECTIVE MEASURES AGAINST LOOTING OF BANKS

श्री टी० एस० नेगी (टिहरी गढ़वाल) : मान्यवर, देश के बैंकों का जब से राष्ट्रीयकरण हुआ है तब से बराबर चोरियां, डकैतियां एवं घोटालों के मामले हजारों की तादाद में सरकार के सामने आये हैं लेकिन बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि कोई भी कारगर कदम सरकार ने अभी तक नहीं उठाया है। पिछले वर्ष सरकारी बैंको की 70 शाखाओं में डाके पड़े और डकैत उप-वित्त मंत्री के अनुसार डेढ़ करोड़ रुपए और नगदी लूट ले गये। हर वर्ष बैंक डकैतियां एवं चोरियां बढ़ती ही जा रही हैं। तब यह कैसे मान लिया जाये कि बैंकों की डकैतियां रोकने के लिए सरकार सतर्कता बरत रही है। क्या अन्धाधुन्ध कमाई करने वाले बैंकों के लिए यह सम्भव नहीं है कि बही खाते लिखने वाले दर्जनों कर्मचारियों की नियुक्ति के साथ-साथ एक दो उनकी रक्षा के लिए गार्डों की भी नियुक्ति करें ? यह करना चाहिये। कई बैंकों में डकैतियां ऐसी पड़ी हैं जिनसे पता चलता है कि बैंक कर्मचारियों की ओर से डकैतों को प्रत्यक्ष या परोक्ष सह देने की सम्भावना है। जहां कोई आदमी जा नहीं सकता वहां अनजाने डकैत कैसे पहुंच कर डकैती डाल कर चले जाते हैं। और यह डकैत उसी समय आते हैं जब बैंक में ग्राहक नहीं होते हैं।

दूसरी तरह से भी बैंकों से धन लूटा जा रहा है फर्जी कागजातों के बल करोड़ों रुपयों का घपला किया जा रहा है। बैंकों को बाहरी एवं अन्दरूनी दोनों तरह की सुरक्षा की आवश्यकता है जिसका ताजा उदाहरण अभी हाल में एक बैंक में दो करोड़ रुपए की हेराफेरी का पता चला है जिसमें बैंक के एक अधिकारी का ही दोष है। यह लोक महत्व का मामला है इस पर सरकार को तुरन्त कार्यवाही करने से कतराना नहीं चाहिये।

(iv) ACCIDENTS IN SAUNDA COLLIERY IN BIHAR AND COMPENSATION TO HEIRS OF THE DECEASED.

श्री राम विलास पासवान (हाजीपुर): उपाध्यक्ष महोदय बिहार के हजारीबाग जिलान्तर्गत सौंदा कोलियरी में श्रमिक संगठन के मांग एवं आन्दोलन करने के बावजूद भी मैनेजमेंट द्वारा खान-सुरक्षा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है' फलस्वरूप बराबर खान-दुर्घटनायें घट रही हैं और मजदूर मर रहे हैं।

एक घटना 16-7-82 को घटी जिसमें एक मजदूर मारा गया, जब कि उस घटना के पहले ही 12-7-82 को मजदूरों ने प्रदर्शन कर खान सुरक्षा की मांग की थी। बजाय खान सुरक्षा पर ध्यान देने के मैनेजमेंट ने यूनियन के सचिव को निलम्बित कर दिया। पुनः 16-8-82 को दूसरी घटना घट गई और उसमें भी मजदूर मरे।

उस घटना के पहले भी मजदूरों ने लिखकर दिया था कि घटना घटी सकती है। उसके बाद पुनः घटना घटी जिसमें एक मजदूर मारा गया। अभी ताजी घटना 18-3-83 को घटी, जिसमें एक मजदूर मर गया और दूसरा गंभीर रूप से घायल हुआ। उसकी भी हालत चिन्ताजनक है। मैं 19-3-83 को वहां गया था। मजदूरों ने मुझे बताया कि वे लोग खान की स्थिति को देखकर काम पर जाने से इन्कार कर दिये थे लेकिन मैनेजमेंट ने जबर्दस्ती दबाव डालकर मजदूरों